हिन्दी साहित्य

(द्वितीय प्रश्न–पत्र–निबन्ध एवं नायक)

Time Allowed : Three Hours **Maximum marks : 100**

प्रश्नों का उत्तर 500 शब्दों की सीमा में होना चाहिए।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) पृथ्वी का धर्म यही तो है–न्याय की रक्षा और अन्याय के प्रतिरोध के लिए निरन्तर संघर्ष, सब कुछ सहकर भी अपना मस्तक ऊँचा रखेन का संकल्प, निष्ठा और अनन्यता की अग्नि परीक्षा मतें खरा निकलकल भी अयाची और अदीन बने रहने का कठोर आत्मबल, अपने को अर्पित करके भी अर्पित रूप में अपना अस्तित्व अमिट रखने का यत्न और आकाश देवता की अराधना करते हुए भी धरती के प्रति ममत्त्व–यही तो पार्थिव धर्म है। 10

अथवा

भक्ति–आन्दोलन अखिल भारतीय सांस्कृतिक आन्दोलन था। इस आन्दोलन की श्रेष्ठ देन थे, तुलसीदास। उन्होंने निपुण–पंथयों और सगुण मतावलंबियों को एक किया, उन्होंने वैष्णवों और शाक्तों को मिलाया। उन्होंने भक्ति के आधार पर जनसाधारण के लिए धर्म को सरल और सुलभ बनाकर पुरोहितों के धर्मिक एकाधिकार की जड़ें हिला दीं। तुलसीदास मानवीय करूणा के अन्यतम कवि हैं। उके रामदीनबंधु हैं। "सबरी गीधसुसेवकनि, सुगति कीन्ह रघुनाथ" निषाद, समाज का परित्यक्त अन्यज, राम के लिए 'भरत समभ्राता' है। वनवासी कोल–किरात राम के दर्शन से प्रसन्न होते हैं। "आमीर जवन की किरात खस स्वपचादि" सी राम के स्मरण से मोक्ष लाभ करते हैं। 10

(ख) कविता तुम्हारे सूने दिलों में संगीन भरती है, स्त्री भी तुम्हारे ऊबे हुए मन को बहलाती है। पुरूष जब जीवन की सूखी चट्टानों पर चढ़ता–चढ़ता थक जाता है तब सोचता है, "चलो थोड़ा मन–बहलाव ही कर लें।" स्त्री पर अपना सारा प्यार अपने सारे अरमान निछावर कर देता है, मानों दुनियां में और कुछ हो ही न । और उसके बाद जब चाँदनी बीत जाती है, तब कविता भी नीरव हो जाती है। तब पुरूष

http://questionpaperesult.com/

Scanned by CamScanner

को चट्टानें फिर बुलाती है और वह ऐसे भागता है, मानों पिंजडे से छुटा हुआ पंछी। और स्त्री के लिए फिर वह अंधेरा, फिर वही सूनापन। 10

अथवा

वे सब मर गए–एक गाँधी को छोड़कर, और जो मर गया, वह समाप्त हो गया। बड़ा वह जो वसूल कर सके–रूपया, पैसा, दीन, ईमान सब कुछ आपसे छीन सके–और जो मर गया, वह कुछ वसूल नहीं कर सकता। आज उसकी कोई हस्ती नहीं, तो उसका नाम ही क्यों, और इसी से जनाब मैं कह सकता हूँ कि आप गलती करते हैं। शैली, नेपोलियन, लेनिन, गाँधी से सब नाम हैं–नाम इन सबों से बड़ा–कहीं बड़ा मैं हूँ, अभी आप लोगों पर साबित हो जायेगा। 10

(ग) होना न होना तुम लोगों के हाथ में नहीं है। (आसमान की ओर इशारा करते हुए) वह तो उसके हाथ में है। उसके लिए प्रयत्न करना तुम्हारे हाथ में अवश्य है।..... प्रयत्न सफल ही हो, यह कहना संभव नहीं। प्रयत्न की सफलता प्रयत्न करते समय तक है। इसलिए मैं कहता हूँ कि प्रयत्न करो। तन–मन से प्रयत्न करो। ..... हालांकि पांचों अंगुली एक सी नहीं होती, यह सच है। परन्तु यह भी उतना ही बड़ा सच है कि पांचों उंगलियों में एक–सा रक्त बह रहा है और उनमें से किसी को काट कर अलग नहीं किया जा सकता। ..... न उनमें से कोई किसी का शोषण करता है। ..... सब मिलकर रहती हैं। उनमें छोटे–बड़े का भेद–भाव नहीं है। 10

अथवा

भगवान भारत के वश में है। ..... याद रखो, इंसान से बड़ा भगवान नहीं है। यदि होता तो उसे इंसान बनकर मृत्यु लोक में आने की इच्छा कभी पैदा नहीं होती। इसलिए हे भक्तों, तुम सच्चे इंसान हो और सबसे ऊपर हो। फल की तरह सदा खिलते–महकते रहो और पानी की तरह सदा बहते रहो। ठहरना पाप है। बराबर काम में लगे रहो। ..... काम ही ईश्वर है। काम ही भक्ति है। काम ही जीवन का अर्थ है। .....अन्याय को कभी मत सहो। स्वराज्य को लाओ, स्वराज्य की लिए मर मिटना तुम्हारा सच्चा धर्म है। तुम्हारे हाथ में जो धवल्यों ध्वजा है, वह शांति का प्रतीक है। परन्तु शांति का अर्थ कायरता नहीं है। .....पढ़ों, समझों और समझे हुए को गुनों। तुम्हें यही मेरा आशीर्वाद है। यही शुभकमानाएँ हैं। 10

2. कन्हैया लाल सहल के "राजस्थानी साहित्य में राष्ट्रीय भावना" निबंध में व्यक्त विचारों को स्पष्ट कीजिए। (शब्द सीमा–500 शब्द)

अथवा

देश की एकता के मार्ग में आने वाली बाधाओकं का उल्लेख करते हुए "भारत एक है" निबंध के आधार पर भारत की विविधताओं पर प्रकाश डालिए। (शब्द सीमा–500 शब्द) 18

3. "नया–पुराना, एंकाकी में श्री उपेन्द्रनाथा 'अश्क' ने वर्तमान समाज में आयी अर्थप्रियता, स्वार्थलोलुपता एवं अविश्वास की भावना का बड़ा ही सजीव रूप अंकित किया है।" इस कथन के आलोक में 'नया–पुराना' एकांकी की समीक्षा कीजिए। (शब्द सीमा–500शब्द) 18

अथवा

http://questionpaperesult.com/

Scanned by CamScanner

"ईद और होली एकांकी साम्प्रदायिक विद्वेष पर इंसानियत की विजय का प्रमाण प्रस्तुत करता है।" इस कथन के आलोक में इस एकांकी की समीक्षा कीजिए। (शब्द सीमा–500शब्द) 18

4. नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'रक्त ध्वज' नाटक की समीक्षा कीजिए। (शब्द सीमा–500शब्द) 18

अथवा

"गोविन्द गिरी का चरित्र गाँधी जी के अहिंसात्मक चरित्र से समानता रखता है।" इस कथन के आलोक में गोविन्द गिरि की अन्य चारित्रिक विशेषताएँ भी बताइये। (शब्द सीमा–500शब्द) 18

5. हिन्दी निबंध के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए। (शब्द सीमा–500शब्द) 16

अथवा

निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणीयाँ लिखिए– 4+4+4+4

(1) नाटक की परिभाषा और उसके तत्त्व
(2) भारतेन्दु युग और हिन्दी नायक
(3) संकलन–त्रय
(4) निबंधकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(5) एकांकीकार डॉ. रामकुमार वर्मा
(6) निबंध की परिभाषा और उसके भेद
(7) नाटक एवं एकांकी में अन्तर (शब्द सीमा–150 शब्द)

http://questionpaperesult.com/

Scanned by CamScanner